वर्ष 7, अंक 9

ISSN 2456-3838

पिक्चर प्लस

ज़िन्दगी का बायस्कोप

मई 2024 ₹ 65

सियासत का बॉक्स ऑफिस

ISSN : 2456-3838
Licence No. F2 (P19) PRESS 2016

पिक्चर प्लस
वर्ष 7 अंक 9, मई 2024
(मासिक/द्विभाषिक हिंदी-अंग्रेजी)

संपादक
संजीव श्रीवास्तव

संपादन सहयोग
कल्पना कुमारी

कवर डिजाइन
ज़ाहिद मोहम्मद खान

लेआउट डिजाइन : शाश्वती

पंजीकृत पता
37/ए, गली नंबर 2,
प्रताप नगर, मयूर विहार, फेज-1
दिल्ली-110091

मूल्य- 65 रुपये (एक प्रति)
वार्षिक - 1,000 रुपये (व्यक्तिगत)
5,000 रुपये (संस्थागत)

आप डिजिटल संस्करण को नॉटनल (www.notnul.com) से ख़रीद सकते हैं।

संपर्क : 9313677771
ईमेल : pictureplus2016@gmail.com

नोट : सभी रचनाओं में व्यक्त विचारों से पत्रिका की संपादकीय नीति तथा लेखक-प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं। पत्रिका के किसी भी पक्ष से संबंधित कानूनी निपटारे का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

(सभी चित्र इंटरनेट से साभार)
सभी पद अवैतनिक

अनुक्रम

05 संपादकीय : चलती का नाम गाड़ी : राजनीति के आइटम नंबर!

माधुरी के वे दिन

06 अरविन्द कुमार : राज बब्बर, नाम सामने आते ही याद आता है आपातकाल

कवर स्टोरी: सियासत का बॉक्स ऑफिस

10 प्रहलाद अग्रवाल : राजनीति में 'सही नेता' की 'परख'
12 सुधीर मिश्रा : राजनीति को सीरियसली लें
13 पंकज कपूर : सत्ता के स्क्रीन पर जिम्मेदार रोल निभाएं
14 डॉ. अचला नागर : सितारों से उम्मीद ही क्यों करते हैं?
15 यशपाल शर्मा : सुनील दत्त की शख्सियत से सीखें
17 रविदेव सिंह : सितारों का रिटायरमेंट प्लान
18 मनोज शर्मा : सितारे खुद शो-पीस बनते हैं
20 इकबाल रिज़वी : फिल्मवालों की नेशनल पार्टी
22 ब्रजेश्वर मदान :राजनैतिक सिनेमा का खुलता जबड़ा
26 अजय ब्रह्मात्मज : 2024 का चुनाव और हिंदी फिल्में
28 इंद्रजीत सिंह : जावेद अख्तर: सिनेमा से संसद तक
30 संजीव श्रीवास्तव : फिल्मों में मतदान, संविधान और लोकतंत्र के डायलॉग

इस शहर में सिनेमा हॉल था : जबलपुर के सिनेमा घरों की यादें

38 दिनेश चौधरी : नाचती-खेलती वो रंगीन रोशनियों का जादू

फिल्म पत्रकारिता - 14

43 विनोद तिवारी : 'संपादक' भी 'निर्देशक' होता है

पुस्तक प्लस

48 डॉ. राजेश शर्मा : सारा शहर मुझे लॉयन के नाम से जानता है : अजीत
51 अभिषेक सिंह : आइटम सॉन्ग: सिल्वर स्क्रीन का दोहरा चरित्र
54 राघवेन्द्र रावत : द लास्ट मील (फिल्म समीक्षा)
55 *Global Screen* : Summer Movies to Watch in May June

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक संजीव श्रीवास्तव द्वारा 37-ए, गली नं. 2, प्रताप नगर मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली–110091 से प्रकाशित। संपादक-संजीव श्रीवास्तव। चंद्रशेखर प्रिंटर्स, WZ/439/ नारायणा विलेज, नई दिल्ली-110026 से मुद्रित।

'पिक्चर प्लस' मित्र मंडल

पिक्चर प्लस
जिन्दगी का बायस्कोप

मित्रो, 'पिक्चर प्लस' पत्रिका सार्थक फिल्म पत्रकारिता की गरिमा की पुनर्स्थापना की एक मुहिम है। यह छह सालों से जारी है। इस दौरान हमने महसूस किया है कि हाल के समय में सिनेमा के प्रति लोगों का नजरिया बदल गया है। इसके कई कारण हो सकते हैं। लेकिन आज हम जिस सोच और नजरिये के संक्रमण काल में जी रहे हैं वहां एक बार फिर संजीदा फिल्म पत्रकारिता की जरूरत है। क्योंकि साहित्य और पत्रकारिता का स्तर किसी भी विधा की प्रतिष्ठा और नजरिया का आधार होता है।

मित्रो, 'पिक्चर प्लस' पत्रिका जिम्मेदार फिल्म पत्रकारिता को बहाल करना चाहती है। लंबे समय से एक ऐसी फिल्म पत्रिका की आवश्यकता महसूस की जा रही थी जो सार्थक सिनेमा पत्रकारिता के लिए कटिबद्ध हो। 'पिक्चर प्लस' उस मिशन के लिए समर्पित है। 'पिक्चर प्लस' एक ऐसा सेतु तैयार करना चाहता है जहां सिनेमा व अन्य परफॉर्मिंग आर्ट्स से संबद्ध अध्ययन, प्रकाशन तथा चिंतन-मनन की राह प्रशस्त हो।

इस संदर्भ में 'पिक्चर प्लस' आप सबसे एक निवेदन प्रस्तुत करता है। कृपया इस पत्रिका से जुड़ें तथा इसे मजबूती प्रदान करें। वस्तुत: हम औपचारिक ग्राहक या सदस्यता अभियान से ऊपर उठकर विचार करना चाहते हैं। हम ग्राहक नहीं बल्कि 'पिक्चर प्लस मित्र मंडल' का सृजन करना चाहते हैं।

कृपया इस संबंध में अपनी राय से हमारा मार्गदर्शन करें। आपका सहयोग हमारा संबल है।

वार्षिक सहयोग राशि
1000/- रूपये (व्यक्तिगत)
5000/- रूपये (संस्थागत)

आजीवन सहयोग राशि
10,000/- रुपये (व्यक्तिगत)
20,000/- रुपये (संस्थागत)

भुगतान करने के लिए निम्न बैंक विवरण की सहायता लें।
NAME: **PICTURE PLUS**
BANK: **UCO BANK**
A/C No: **18770210003176**
IFSC: **UCBA0001877**
BRANCH: **MAYUR VIHAR, PHASE-1, DELHI-110091**
PayTM अथवा **phonePe** के लिए नंबर है- **9313677771**

आप से निवेदन है कृपया इसे औपचारिक सदस्यता या चंदा अभियान न समझें। यह सार्थक फिल्म पत्रकारिता को मजबूती देने की मुहिम है। इसमें भागीदार बनें।

आभार

संस्थापक

pictureplus2016@gmail.com 9313677771

राजनीति के आइटम नंबर!

चुनाव आते ही कुछ फिल्मी नजीर याद आने लगते हैं। आंधी का गीत याद आता है- आली जनाब आए हैं...। प्रतिघात का गीत याद आता है- हमरे बलमा बेईमान हमें पटियाने आए हैं, पांच साल में मुंह अपना दिखलाने आए हैं...। और फिर रोटी का वो गीत- ये जो पब्लिक है सब जानती है...ये जो पब्लिक है। संदर्भ अलग-अलग लेकिन मंतव्य एक कि बलमा जनप्रतिनिधि दगाबाज है। क्रांतिवीर में नाना पाटेकर का वो अट्टहास और सन्नाटे के चीथड़े उड़ा देने वाला झन्नाटेदार डायलॉग भला कैसे भूल सकते हैं- आ गए मेरी मौत का तमाशा देखने...। ये फिल्मी नजीर हमने जानबूझ कर मसाला फिल्मों के दिए हैं। क्योंकि सियासत अब खुद एक मसाला है। जैसे लोहा लोहे को काटता है, उसी तरह मसाला भी मसाला के असर को कम करता है। राजनीति अब उत्पाद भी हो चुकी है। यहां राजनेताओं की वैसे ही पैकेजिंग होती है जैसे कि कोई माल बेचा जाता है। जो जितना पावरफुल उसकी पैकेजिंग उतनी भड़कदार है। पैकेजिंग बनाती है कौन कितना ओवरस्टिमेटिड है और कितना अंडरस्टिमेटिड है। रैली और रोड शो जनजागरुकता अभियान नहीं बल्कि इवेंट मैनेजमेंट है तो घोषणापत्र मेलोड्रामाई पेशकश और पारसी थियेटर का चीखता डायलॉग है।

आप कहेंगे मैं बार-बार डायलॉग और गीत शब्द पर जोर क्यों दे रहा हूं। मतलब साफ है- आज की राजनीति डायलॉगबाजी के सिवा कुछ नहीं। रेस इस बात की लगी है कि कौन कितना ऊंचा डायलॉग चीख सकता है। कौन अपनी सामर्थ्य से ज्यादा कीचड़ उछाल सकता है। दूसरी तरफ जो डायलॉग नहीं बोल पाते वो बिना सुर के गीत गाते हैं। इसे जानने-समझने के लिए न पीछे जाने की जरूरत है और न आगे की कल्पना करने की दरकार। सारे नजीर नजरों के सामने हैं। मई का महीना देश में चुनाव का महीना है। पूरा देश इन दिनों ऐसी ही डायलॉगबाजी से गुंजायमान है और ऐसी ओवरस्टिमिटेड पैकेजिंग की चकाचौंध से चौंधियाया है। जनता को कुछ सूझ ही नहीं रहा। जनता ना बोल पा रही है और ना ही कुछ समझ पा रही है आखिर देश में हो क्या रहा है।

यकीन मानिए- ऐसा राजनीति में फिल्मी सितारों के आने से नहीं हुआ है बल्कि नेता तो खुद ही आज सितारे बन गए हैं। हमारे श्रद्धेय प्रहलाद अग्रवाल जी इन्हें राजनीति के टोटका कहते हैं। मतलब कि जो भी राजनीतिक दल वाले अगर सितारों को लेकर आते हैं तो उनका आशय ना केवल जीत का संख्या बल बढ़ाना होता है, बल्कि वे सोचते हैं सितारों के आने से उनकी पार्टी की मार्केटिंग और टीआरपी बढ़ेगी। यहां टीआरपी मतलब जनता की भीड़ है। इस लिहाज से मैं इन्हें राजनीति के आइटम नंबर भी कहना चाहता हूं। किसी फिल्म में कहानी जब बोर करने लगती है या उसके फ्लॉप होने का खतरा बढ़ जाता है तो उसमें एक-दो आइटम नंबर डाल दिया जाता है। ये राजनीति का रस नहीं, रसायनबोध है। राजनीति के मैदान में हिंदी फिल्मों के निन्यानवे फीसदी सितारे अपने पॉलिटिकल आका के केवल आइटम नंबर होते हैं। लेकिन ये लोकतंत्र है। यहां आइटम नंबर करना भी किसी की इच्छा का सवाल है और टोटके करने वाले शख्स को भी सम्मान से जीने का हक है। किसी की निजता पर कोई टिप्पणी नहीं। लेकिन हां, यहां आम जनता को भी अपनी निजता की सुरक्षा करने का पूरा हक है। उसका सम्मान भी जरूरी है। वो नहीं कहना चाहे कि सूरज पश्चिम से निकलता है तो उसे जबरन नहीं कहलवा सकते।

बहरहाल सिनेमा से संसद तक की यात्रा करने वाले फिल्मी सितारों पर केंद्रित यह अंक आप सबको कैसा लगा, हमें जरूर अपना बहुमूल्य सुझाव भेजिएगा। हमारा अगला अंक सिनेमा और सैर सपाटा है। ग्रीष्मकाल में शांति और शीतलता की तलाश में देश के पहाड़ी इलाकों में गहमागहमी बढ़ जाती है। कई फिल्में इस विषय पर बनी हैं। अगले अंक में हम ऐसी क्लासिक व मॉडर्न फिल्मों पर चर्चा करेंगे। अपना स्नेह बनाए रखें। पत्र व्यवहार करते रहें। अब हम जुटते हैं अगले अंक की तैयारी में।

आपका संपादक

संजीव श्रीवास्तव